कालसर्प योग – एक सम्यक दृष्टि

डॉ. सुशील अग्रवाल

आर्ष ज्योतिषीय शास्त्र में कालसर्प योग का वर्णन न होने के कारण ज्योतिषाचार्यों के बीच में इसके होने या न होने पर मतभेद है। कुछ आचार्य इसके होने को सिरे से खारिज करते हैं जबकि कुछ आचार्य इसे बहुत प्रभावी मानते हैं। इस लेख में निष्पक्ष दृष्टिकोण से विश्लेषण करते हुए अंत में किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करेंगे।

1. विषय प्रवेश

जन्म समय की ग्रह–स्थिति ही जातक की कुंडली में ग्रहों की स्थिति होती है। ग्रहों की इन स्थितियों से अनेकों ज्योतिषीय योग बनते हैं जो पूर्व जन्मों के संचित कर्मों से इस जन्म में प्रारब्ध के रूप में जातक को प्राप्त होते हैं।

कुण्डली में सभी ग्रह राहु–केतु के मध्य स्थित हों तो कालसर्प योग कहा जाता है।

2. आर्ष साहित्यिक दृष्टिकोण

किसी भी प्रामाणिक ज्योतिषीय शास्त्र में कालसर्प योग का वर्णन नहीं है।

ज्योतिष में सामान्यतः योग दो प्रकार के होते हैं। प्रथम श्रेणी के योग सम्बंधित दशा एवं गोचर आने पर ही फलप्रद होते हैं और यदि दशा–गोचर जीवनपर्यन्त न आये तो योग फलित नहीं होते। दूसरी श्रेणी के योगों का फल जीवनपर्यन्त मिलता रहता है जिन्हें नाभस योग भी कहते हैं।

योग शुभाशुभ दोनों प्रकार के हो सकते हैं। ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार, यदि राहु–केतु राजयोग निर्मित करते हैं तो अपनी महादशा/अंतर्दशा में शुभ फल देने में सक्षम होते हैं। इन राजयोग के बनने की तीन अवस्थाएं बताई गयी हैं :

- त्रिकोणस्थ हों और केन्द्रेश से सम्बन्ध बनायें
- केंद्रस्थ हों और त्रिकोणेश से सम्बन्ध बनायें
- केंद्र या त्रिकोण के अतिरिक्त किसी अन्य भाव में हों और केन्द्रेश एवं त्रिकोणेश से सम्बन्ध बनायें।

इसके अतिरिक्त राहु को निर्विवाद रूप से नैसर्गिक अशुभ ग्रह माना गया है जिसकी स्थिति एवं बलानुसार जातक पर नैसर्गिक अशुभ प्रभाव होना भी स्वाभाविक है।

अतः राहु–केतु नैसर्गिक अशुभ ग्रह तो हैं परन्तु अन्य नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की भांति स्थिति एवं बलानुसार शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल देने में सक्षम हैं।

3. आधुनिक दृष्टिकोण

डॉ. रमन के अनुसार यह योग जातक को जुझारू, मेहनती बनाता है पर मानसिक अस्थिरता भी देता है। इसके दुष्प्रभाव निष्क्रिय हो जाते हैं यदि एक भी ग्रह राहु–केतु के साथ हो अथवा उनकी अंशात्मक परिधि से बाहर हो या यह योग लग्न–सप्तम अक्ष पर बन रहा हो।

कुछ आचार्य कालसर्प योग के सन्दर्भ में शास्त्रीय नाभस योग का उल्लेख करते हैं जिसमें दल योग के अंतर्गत सर्प योग वर्णित है। कुंडली में सर्प योग निर्मित होगा, यदि सभी पापी ग्रह लग्न से केंद्र भावों में स्थित हों। परन्तु, शास्त्रीय नाभस योगों में राहु–केतु को सम्मिलित नहीं किया जाता है और आकृति से भी कालसर्प योग और सर्प योग की तुलना तर्कसंगत नहीं लगती।

अतः आधुनिक दृष्टिकोण से मत–भिन्नता ज्यों की त्यों बनी हुई है।

4. संभावित आधार

आधुनिक समय में इस योग के प्रचलन के पीछे के संभावित आधार पर विचार करें तो :

– राहु को सर्प की संज्ञा भी दी गयी है और सर्प भय का सांकेतिक प्रतिचित्रण है। यदि सभी ग्रह सर्प के मुख की तरफ होंगे तो सर्प के विष का सामना करना पड़ेगा अर्थात्,

सभी ग्रह अशुभ प्रभावित होंगे।

– शास्त्रीय सन्दर्भ से यदि एक भाव/ग्रह दो पाप ग्रहों के मध्य आ जाता है तो वह भाव/ग्रह पाप–कर्तरी हो जाता है जिससे उसकी अशुभता बढ़ जाती है। कालसर्प योग के अंतर्गत तो सभी ग्रह राहु–केतु के मध्य होते हैं।

– मेदिनी और जातक होरा में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण को अशुभ फलप्रद माना गया है। ग्रहण लगने में राहु–केतु सूर्य–चन्द्र से युत होते हैं। लग्न, चन्द्र और सूर्य कुंडलियों में से दो कुंडलियाँ अशुभ प्रभावित हो जाती हैं।

5. सकारात्मक उदाहरण

निम्न विशिष्ट जातकों ने अपनी कुंडलियों में कालसर्प योग होने के बावजूद बहुत सफलता अर्जित की। जिसमें पं. जवाहर लाल नेहरू, धीरू भाई अंबानी, सचिन तेंदुलकर, डॉ. शंकर दयाल शर्मा, लता मंगेशकर, मार्गरेट थैचर, डॉ. राधाकृष्णन आदि प्रमुख हैं।

उदाहरण–1 : सचिन तेंदुलकर, 24 अप्रैल 1973, 14:25 बजे, मुंबई। लग्नेश उच्चस्थ होकर नवमस्थ है और भाग्येश एवं योगकारक मंगल भी उच्चस्थ हैं। राहु शुभ स्थित, द्वादशेश से युत और राहु के राशीश नीच भंग राजयोगी हैं।

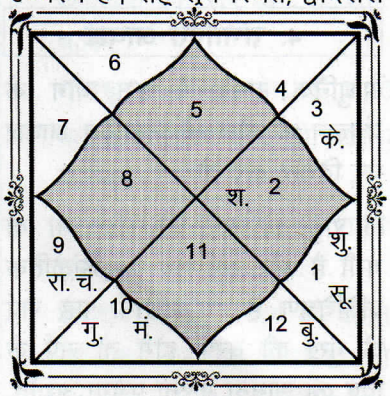

आइये, कुछ सामान्य जातकों की कुंडली भी देखते हैं जिन्हें कालसर्प योग ने प्रभावित नहीं किया।

उदाहरण–2 : 20 जनवरी 1966, 13:54 बजे, दिल्ली। आकर्षक व्यक्तित्व, कंप्यूटर इंजीनियर हैं, पिता की 2011 में मृत्यु से पूर्व 9 साल बहुत सेवा की, शुद्ध शाकाहारी,

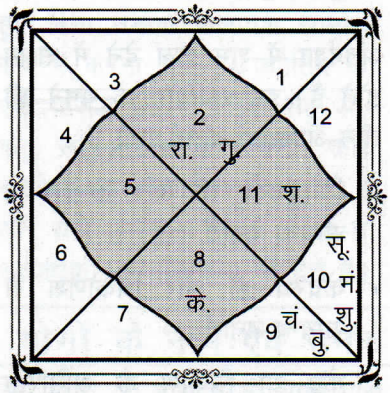

नौकरी में बहुत मेहनत एवं तरक्की की और 2016 से अपना व्यवसाय कर रहे हैं। राहु वृषभ राशि में बली होते हैं और शुभ युत हैं। राहु के राशीश शुक्र शुभ स्थित हैं परन्तु कुछ पाप प्रभाव भी है।

उदाहरण–3 : 24 मार्च 1978, 10:34 बजे, इटावा, उत्तर प्रदेश। मध्यम कद, कंप्यूटर इंजीनियर, चार बड़े भाइयों एवं एक बड़ी बहन के

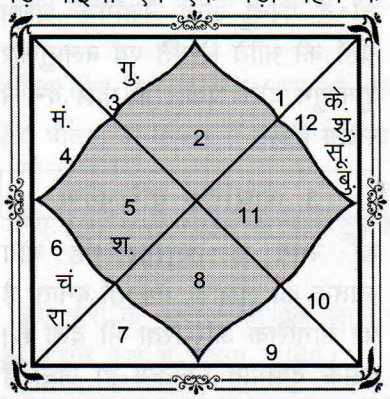

चहेते, समाज सेवा में तत्पर, मधुर भाषी, सात्विक भोजन, शादी–शुदा और संतान युक्त। राहु शुभ स्थित, शुभ युत और शुभ दृष्ट। सूर्य का कुछ अशुभ प्रभाव भी है परन्तु सूर्य केन्द्रेश भी हैं।

उदाहरण–4 : 17 मार्च 1978, 5:55 बजे, दिल्ली। मधुरभाषी, व्यवसायी, पत्नी दो साल बड़ी, दो बेटे, अच्छा पारिवारिक वातावरण,

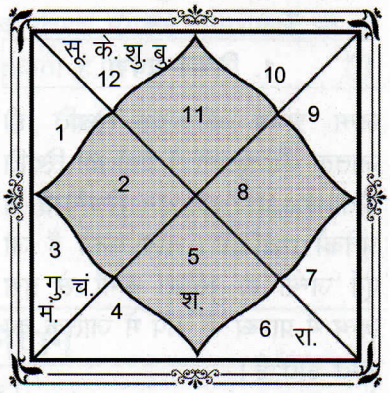

अच्छा व्यवसाय। लग्न बली, नीचभंग राजयोगी, राशीश बुध द्वारा दृष्ट, उच्चस्थ योगकारक शुक्र द्वारा दृष्ट, अशुभ दृष्ट भी और अशुभ स्थित आदि।

6. नकारात्मक उदाहरण

निम्न जातकों की कुंडलियों में कालसर्प योग निर्मित है। इन जातकों का जीवन संघर्षमय है।

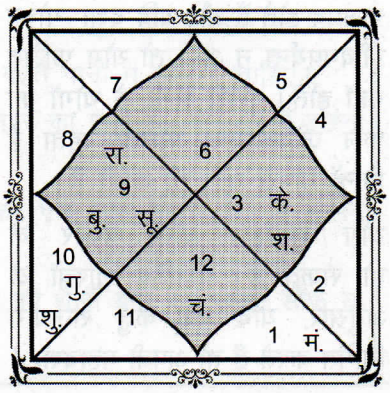

उदाहरण–5 : 01 जनवरी 1974, 00:08 बजे, रजिम, छत्तीसगढ़। सुदृढ़ पारिवारिक वातावरण है परन्तु जातक दबंग स्वभाव एवं आपराधिक प्रवृत्ति का जिस कारणवश अपराध किया और जेल गया। राहु पीड़ित, लग्नेश पीड़ित और राहु का राशीश गुरु नीचस्थ।

उदाहरण–6 : दिव्या भारती, 25 फरवरी 1974, 23:00 बजे, मुंबई, महाराष्ट्र। अभिनेत्री जिनकी शिक्षा 12वीं तक रही। जातिका का खान–पान तामसिक प्रवृत्ति का था और बहुत ही छोटी उम्र में उन्होंने

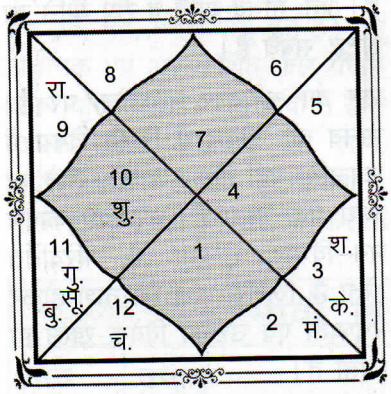

आत्महत्या कर ली थी। राहु पीड़ित और राहु का राशीश भी पीड़ित।

उदाहरण–7 : 12 जुलाई 1978, 18:30 बजे, औरंगाबाद, महाराष्ट्र। 8 वर्ष की उम्र में माता का देहांत, 20 वर्ष की उम्र में पिता का देहांत,

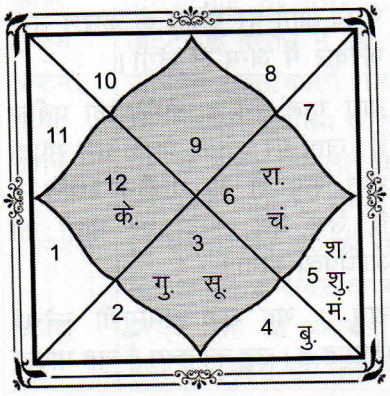

सौतेली माता का अच्छा व्यवहार नहीं, बहुत संघर्ष किया और मार्केटिंग सम्बंधित नौकरी है। पिता के देहांत के तुरंत बाद 20 वर्ष में ही विवाह कर लिया। 2001 में पैतृक संपत्ति का झगड़ा हुआ जिसमें अल्प समय पुलिस कस्टडी में भी रहे। लग्न बली परन्तु राहु अष्टमेश युत और राशीश अष्टमस्थ हैं।

उदाहरण–8 : 09 जुलाई 1978, 07:55 बजे, डिबियापुर, उत्तर प्रदेश। सामान्य व्यक्तित्व, कंप्यूटर हार्डवेयर

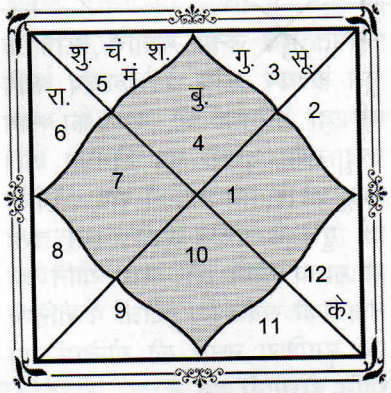

क्षेत्र में छोटी–मोटी नौकरी, काफी बार नौकरी छूटी और पुनः नौकरी मिलने में देरी हुई। शादी–शुदा पर तनावपूर्ण पारिवारिक जीवन। राहु शुभाशुभ प्रभाव रहित और राशीश शत्रु राशिस्थ होकर लग्न में जिनके आगे–पीछे सभी शुभाशुभ ग्रह स्थिति। लग्न पर दबाव और लग्नेश पीड़ित।

7. मिश्रित प्रभाव

निम्न जातकों की कुंडलियों में भी कालसर्प विद्यमान है और जातकों को अपने जीवन में मिश्रित परिणाम मिले।

उदाहरण–9 : 02 फरवरी 1964, 10:20 बजे, मेरठ, उत्तर प्रदेश। टेलीविजन के सीरियल बनाते हैं और आर्थिक रूप से ठीक हैं परन्तु

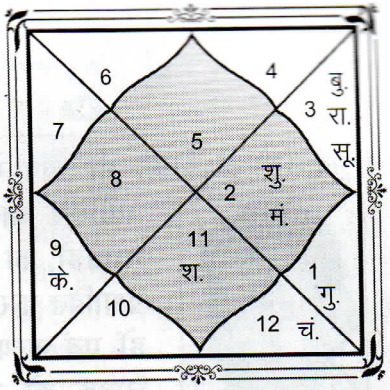

पारिवारिक जीवन पूर्णतः अस्त–व्यस्त हैं क्योंकि अभी तक तीन संबंध विच्छेद हो चुके हैं। राहु पर शुभाशुभ दोनों प्रभाव हैं। दशम में राजयोग है परन्तु लग्न पर जन्म एवं नवांश में मंगल का प्रभाव है।

8. निष्कर्ष

साढ़े–साती और मांगलिक दोष की तरह ही कालसर्प योग के विषय में भी समाज में बहुत डर है और बहुत से अंधविश्वास इससे जुड़े हैं।

पराशर जी के अनुसार ग्रहों के स्वभाववश साधारण और स्थानादिवश विशिष्ट फल होते हैं। क्योंकि राहु नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं इसीलिए उनकी किसी भी भाव में उपस्थिति उनके स्वभाववश नैसर्गिक अशुभता लाती है परन्तु उनके विशिष्ट शुभाशुभ फल कुंडली विश्लेषण द्वारा ही किया जाना शास्त्र संगत है।

उपरोक्त उदाहरणों में भी हमने देखा कि मात्र राहु–केतु के मध्य सभी ग्रहों के आने से कुंडली अशुभ फलप्रद नहीं हो रही बल्कि सम्पूर्ण कुंडली के विश्लेषण, दशा और गोचर के अनुसार ही फलादेश करना उचित होता है। □

पता : बी–301, सोम अपार्टमेंट्स,
सेक्टर–6, प्लॉट–24, द्वारका,
नयी दिल्ली–110075
दूरभाष : 9810162371